२. यूरोप और भारत

आधुनिक कालखंड में यूरोप में घटित होने वाली विभिन्न गतिविधियों अर्थात घटनाओं का परिणाम भारत में दिखाई देता था । अतः आधुनिक भारत के ऐतिहासिक कालखंड का अध्ययन करते समय यूरोप में घटित घटनाओं का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है ।

पनर गरण यग : यूरोपीय इतिहास में मध्ययुग का अंतिम चरण १३ ई. शताब्दी से १६ ई. शताब्दी के बीच की शताब्दियाँ हैं । ये शताब्दियाँ पुनर्जागरण युग के रूप में जानी जाती हैं । इस युग में पुनर्जागरण, धार्मिक सुधार आंदोलन और भौगोलिक खोजों जैसी घटनाओं के फलस्वरूप आधुनिक युग की नींव रखी गई । अतः इस युग को 'पुनर्जागरण युग' कहते हैं ।

पुनर्जागरण युग में यूरोप की कलाओं, स्थापत्य और दर्शनशास्त्र आदि क्षेत्रों में ग्रीक (यूनानी) और रोमन परंपराएँ पुनर्जीवित हुईं । इसके द्वारा सर्वांगीण प्रगति होने में प्रेरणा मिली । पुनर्जागरण युग में मानवता को महत्त्व प्राप्त हुआ । मनुष्य का मनुष्य की ओर देखने के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया ।

तलओनार ि-तवंसी : पुनर्जागरण युग का सर्वगुणसंपन्न व्यक्तित्व माना जाता है । वह अनेक शास्त्रों और कलाओं में पारंगत था । शिल्पकला, स्थापत्यकला, गणित, अभियांत्रिकी, संगीत, खगोल विज्ञान जैसे विविध विषयों पर उसका असाधारण अधिकार था परंतु वह चित्रकार के रूप में विश्वविख्यात सिद्ध हुआ । उसकी 'मोनालिसा' और 'द लास्ट सपर' चित्रकृतियाँ कालजयी बनीं ।

धर्म के बदले सभी विचारों का केंद्रबिंदु मनुष्य बना ।

पुनर्जागरण आंदोलन ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को व्याप्त किया । ज्ञान-विज्ञान तथा विभिन्न कलाओं के क्षेत्रों में हम पुनर्जागरण आंदोलन को देख सकते हैं । पुनर्जागरण युग की कलाओं और साहित्य में मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त किया जाने लगा । प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य लिखा जाने लगा; जिससे लोग समझ सकेंगे । लगभग १४५० ई. में जर्मनी के जोहांस गुटेनबर्ग ने छपाई यंत्र का आविष्कार किया । छपाई यंत्र का आविष्कार होने से नए विचार, नई संकल्पनाएँ और ज्ञान का प्रचार-प्रसार समाज के सभी वर्गों तक होने लगा ।

धा क सधार आंिलन : स्वतंत्र बुद्धि और विवेकशीलता से विचार करने वाले विचारकों ने रोमन कैथोलिक चर्च की पारंपरिक धार्मिक संकल्पनाओं की कड़ी आलोचना की । ईसाई धर्मगुरु लोगों के अज्ञान से लाभ उठाकर कर्मकांड का ढोल पीटते थे । धर्म के नाम पर लोगों को लूटते थे । इसके विरोध में यूरोप में जो आंदोलन प्रारंभ हुआ; उसे 'धार्मिक सुधार आंदोलन' कहते हैं । इस आंदोलन के फलस्वरूप धार्मिक क्षेत्र में मनुष्य की स्वतंत्रता और बुद्धिप्रवणता को महत्त्व प्राप्त हुआ ।

भौगोतल्क ि र : १४५३ ई. में आटोमन तुर्कियों ने बाइजंटाइन साम्राज्य की राजधानी कौन्स्टैन्टिनोपाल (इस्तंबूल) को जीत लिया । इस नगर से एशिया और यूरोप को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग जाते थे । तुर्कियों ने ये मार्ग बंद कर दिए । परिणामस्वरूप यूरोपीय देशों को एशिया की ओर जाने वाले नए मार्गों की खोज करने की आवश्यकता अनुभव होने लगी । इसी से भौगोलिक खोजों का नया युग प्रारंभ हुआ ।

इसे समझेंगे–

भौगोतल्क ि ोर : पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोप के समुद्री नाविक भारत की ओर जाने वाले जलमार्ग की खोज करने के लिए समुद्री यात्रा पर निकले ।

- १४८७ ई. में भारत की खोज करने के लिए पुर्तगाली नाविक बार्थोलोम्यू डायस चल पड़ा परंतु वह अफ्रीका के दक्षिणी छोर तक अर्थात केप ऑफ गुड होप तक पहुँचा ।
- १४९२ ई. में क्रिस्तोफर कोलंबस ने पश्चिम की दिशा में चलकर भारत की खोज करने का प्रयास किया परंतु इस प्रयास में वह अमेरिका महाद्वीप के पूर्वी तट पर पहुँचा ।
- १४९८ ई. में पुर्तगाली नाविक वास्को-द-गामा अफ्रीका के दक्षिणी छोर की परिक्रमा कर भारत के पश्चिमी तट पर कालिकत बंदरगाह में आ पहुँचा ।

करके देखें–

- संसार के मानचित्र के ढाँचे में समुद्री नाविकों द्वारा खोजे गए नये समुद्री मार्ग एवं प्रदेश दिखाओ ।

यूरोप वैचारस्क त ि : पुनर्जागरण युग में जो परिवर्तन आए; उनके फलस्वरूप यूरोप की यात्रा मध्ययुग से आधुनिक युग की ओर प्रारंभ हुई । इसी कालखंड में यूरोप में वैचारिक क्रांति हुई । पूर्ववर्ती अज्ञान और अंधश्रद्धा में से समाज मुक्त होने लगा । प्रस्थापित रूढ़ियों और मान्यताओं तथा घटित घटनाओं की ओर वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से देखा जाने लगा । इस समग्र परिवर्तन को 'वैचारिक क्रांति' कहा जाता है । इस वैचारिक क्रांति द्वारा यूरोप में विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान एवं आविष्कार को प्रोत्साहन मिला ।

रार नीतकि ` त ि : आधुनिक युग के प्रारंभिक चरण में यूरोप में अनेक राजनीतिक परिवर्तन हुए । १८ वीं तथा १९ वीं शताब्दी में कई क्रांतिकारी घटनाएँ घटित हुईं । अतः यह युग 'क्रांतियुग' के रूप में जाना जाता है । इस कालखंड में इंग्लैंड में संसदीय लोकतंत्र का विकास हुआ । कैबिनेट प्रणाली के स्वरूप में बदलाव आया । १६८९ ई. के बिल ऑफ राइटस के कारण राजा के अधिकार संकुचित हुए । संसद की संप्रभुता स्थापित हुई ।

अमेरका का स्वा ि य : यूरोप में जो क्रांतिकारी गतिविधियाँ घटित हुईं; उनकी पृष्ठभूमि में अमेरिका के स्वतंत्रता युद्ध का भी विचार करना आवश्यक है । अमेरिका महाद्वीप की खोज होने के पश्चात यूरोप के देशों का ध्यान इस महाद्वीप की ओर आकृष्ट हुआ । साम्राज्यवादी यूरोपीय देशों ने अमेरिका महाद्वीप के विविध प्रदेशों को अपने नियंत्रण में कर वहाँ अपने उपनिवेश स्थापित किए । इंग्लैंड ने उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट पर तेरह उपनिवेश स्थापित किए । प्रारंभ में इंग्लैंड का इन उपनिवेशों पर कहने के लिए वर्चस्व था । परंतु कालांतर में इंग्लैंड की संसद ने अमेरिका के इन उपनिवेशों पर कठोर बंधन और कर लादने प्रारंभ किए । अमेरिका के इन उपनिवेशों में रहने वाली स्वतंत्रताप्रिय जनता ने इसका विरोध किया । इंग्लैंड ने उपनिवेशियों के विरोध को कुचलने के लिए उपनिवेशियों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की । अमेरिका के इन उपनिवेशियों ने जॉर्ज वॉशिंग्टन के नेतृत्व में सैन्य का गठन कर प्रतिकार किया । अंततः उपनिवेशी सेना की विजय हुई । यह घटना 'अमेरिका का स्वतंत्रता युद्ध' के रूप में जानी जाती है । इसी में से एक नया देश– संयुक्त राज्य अमेरिका संघराज्य का उदय हुआ; जिसमें शासन प्रणाली लिखित संविधान और लोकतांत्रिक व्यवस्था को स्थान दिया गया था ।

फ्रांस की राज त ि : १७८९ ई. में फ्रांस की जनता ने वहाँ के निरंकुश और अन्यायकारी राजतंत्र

और रियातसदारी व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह किया और गणतंत्र की स्थापना की । यह घटना 'फ्रांस की राज्यक्रांति' के रूप में जानी जाती है । फ्रांस की राज्यक्रांति ने विश्व को स्वतंत्रता, समता और बंधुता जैसे मूल्यों की देन दी है ।

विश्व के इतिहास में जो राजनीतिक क्रांतियाँ हुईं; उनमें अमेरिका का स्वतंत्रता युद्ध और फ्रांस की राज्यक्रांति को विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

औ्योतगक्र ति : अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से यूरोप में औद्योगिक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन होने लगे । वाष्पशक्ति पर चलने वाले यंत्रों की सहायता से उत्पादन होने लगा । छोटे घरेलू उद्योग-धंधों का स्थान बड़े कारखानों ने ले लिया । हथकरघा के स्थान पर बिजली करघा का उपयोग प्रारंभ हुआ । रेल और जलयानों जैसे यातायात के नये साधन आए । यंत्रयुग का अवतरण हुआ । इसी को 'औद्योगिक क्रांति' कहते हैं ।

औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ इंग्लैंड में हुआ । इसके पश्चात वह धीरे-धीरे पश्चिमी विश्व में फैलती गई । इस समय इंग्लैंड औद्योगिक रूप से इतना संपन्न हुआ कि इंग्लैंड का वर्णन 'विश्व का कारखाना' के रूप में किया जाने लगा ।

पूर्वी का उय : नये समुद्री मार्गों की खोज हुई और इसके पश्चात यूरोप तथा एशिया महाद्वीप के देशों के बीच व्यापार का नया युग प्रारंभ हुआ । समुद्री मार्ग से पूर्वी देशों के साथ व्यापार करने के लिए अनेक व्यापारी आगे आए परंतु अकेले एक व्यापारी के लिए जहाज द्वारा विदेश में माल भेजना संभव नहीं था । फलस्वरूप अनेक व्यापारियों ने इकट्ठे आकर व्यापार करना प्रारंभ किया । इसी में से समभागपूँजीवाली कई व्यापारी कंपनियों का उदय हुआ । पूर्वी देशों के साथ चल रहा यह व्यापार लाभदायी था । इस व्यापार द्वारा देशों की आर्थिक संपन्नता बढ़ रही थी । परिणामतः यूरोप के शासक व्यापारी कंपनियों को सैनिकी संरक्षण और व्यापारिक सुविधाएँ देने लगे । इस व्यापार के फलस्वरूप यूरोपीय देशों के धनसंचय में वृद्धि होने लगी । इस धन-संपत्ति का उपयोग पूँजी के रूप में व्यापार और उद्योग-धंधों में किया जाने लगा । परिणामस्वरूप यूरोप के देशों में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का उदय हुआ ।

उपतन्वेशवा : किसी देश के कुछ लोगों द्वारा दूसरे भूप्रदेश में किसी विशिष्ट क्षेत्र में अपनी बस्ती बसाने को उपनिवेश स्थापित करना कहते हैं । किसी आर्थिक, सैनिकी दृष्टि से बलशाली देश का अपनी सामर्थ्य के बल पर किसी भूप्रदेश को व्याप्त कर उस भूप्रदेश में अपना राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करना 'उपनिवेशवाद' कहलाता है । यूरोपीय देशों की इसी उपनिवेशवादी मानसिकता में से साम्राज्यवाद का उदय हुआ ।

ाज्यवा : विकसित राष्ट्रों द्वारा अविकसित राष्ट्रों पर अपना समग्र वर्चस्व स्थापित करना और अनेक नये उपनिवेश स्थापित करना ही 'साम्राज्यवाद' कहलाता है । एशिया और अफ्रीका महाद्वीप के अनेक देश यूरोपीय राष्ट्रों की इस साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षा के शिकार बने ।

त तदा ईस्ट इंतड्या कंपनी का भार

ाज्यवा : भारत में अपना व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त करने के लिए यूरोपीय सत्ताओं के बीच काँटे की प्रतिद्वंद्विता चल रही थी । १६०० ई. में अंग्रेजों ने भारत में व्यापार करने हेतु ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की थी । इस कंपनी ने जहाँगीर बादशाह से अनुमति प्राप्त करके सूरत में गोदाम की स्थापना की । इस कंपनी द्वारा भारत का इंग्लैंड के साथ व्यापार चलता था ।

अं और फांतसतस के बीच संघर : भारत में चल रही व्यापारिक होड़ में अंग्रेज और फ्रांसिसी एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी थे । इस प्रतिद्वंद्विता के चलते अंग्रेज और फ्रांसिसियों के बीच तीन युद्ध हुए । ये युद्ध 'कर्नाटक युद्ध' के रूप में जाने जाते हैं । तीसरे कर्नाटक युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसिसियों को निर्णायक रूप से पराजित किया । परिणामस्वरूप

भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सम्मुख कोई भी प्रबल यूरोपीय प्रतिस्पर्धी बचा नहीं था ।

बंगाल शि ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता की रखी गई : बंगाल प्रांत भारत का अत्यंत समृद्ध-संपन्न प्रांत था । १७५६ ई. में सिराज-उद्-दौला बंगाल के नवाब पद पर आसीन हुआ । ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों ने मुगल शासक से बंगाल प्रांत में व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त की थीं और ये अधिकारी उन व्यापारिक सुविधाओं का दुरुपयोग करते थे । अंग्रेजों ने नवाब से अनुमति प्राप्त किए बिना कोलकाता में अपने गोदाम के चारों ओर बाड़ खड़ी कर दी । परिणामतः सिराज-उद्-दौला ने अंग्रेजों पर आक्रमण कर कोलकाता का गोदाम अपने नियंत्रण में कर लिया । इस घटना से अंग्रेजों में असंतोष व्याप्त हुआ । रॉबर्ट क्लाइव ने कूटनीति का सहारा लेते हुए नवाब का सेनापति मीर जाफर को नवाब पद का प्रलोभन दिखाया और अपने पक्ष में कर लिया। १७५७ ई. में प्लासी में नवाब सिराज-उद्-दौला और अंग्रेजों की सेनाएँ आमने-सामने आ गईं । परंतु मीर जाफर के नेतृत्व में नवाब की सेना ने युद्ध में भाग नहीं लिया । परिणामतः सिराज-उद्-दौला की पराजय हुई ।

अंग्रेजों के समर्थन से मीर जाफर बंगाल का नवाब बना । आगे चलकर उसके विरोध किए जाने पर अंग्रेजों ने उसके दामाद मीर कासिम को नवाब बनाया । मीर कासिम ने अंग्रेजों के अवैध व्यापार की रोक-थाम करने का प्रयास करते ही अंग्रेजों ने मीर जाफर को नवाब पद प्रदान किया ।

बंगाल में चल रही अंग्रेजों की गतिविधियों पर अंकुश रखने के लिए मीर कासिम, अयोध्या का नवाब शुजा-उद्-दौला और मुगल शासक शाह आलम ने अंग्रेजों के विरुद्ध एकत्रित अभियान चलाया । १७६४ ई. में बिहार के बक्सर नामक स्थान पर यह युद्ध हुआ । इस युद्ध में अंग्रेज विजयी बने । इस युद्ध के पश्चात इलाहाबाद की संधि के अनुसार बंगाल के सूबे में दीवानी अर्थात राजस्व इकट्ठा करने का अधिकार ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को प्राप्त हुआ । इस प्रकार भारत में अंग्रेजी सत्ता की नींव बंगाल में रखी गई ।

: मैसूर राज्य के हैदर अली ने विद्रोह करके मैसूर राज्य को अपने अधिकार में कर लिया । हैदर अली की मृत्यु के पश्चात उसका बेटा टीपू सुलतान मैसूर का सत्तासीन बना । उसने अंग्रेजों के विरुद्ध पूरे प्राणपण से युद्ध किया । अंततः १७९९ ई. में श्रीरंगपट्टन में हुए युद्ध में टीपू सुलतान की मृत्यु हुई । इस प्रकार अंग्रेजों का मैसूर प्रदेश पर अधिकार हो गया ।

टीपू सुलतान

ध पर का अ कार : भारत में अपनी सत्ता को सुरक्षित करने हेतु अंग्रेज पश्चिमोत्तर सीमा की ओर मुड़े । उन्हें भय था कि रूस भारत पर अफगानिस्तान से आक्रमण करेगा । परिणामतः अंग्रेजों ने अफगानिस्तान पर अपना प्रभाव स्थापित करने का निश्चय किया । अफगानिस्तान में जाने वाले मार्ग सिंध में से होकर जाते थे । अतः सिंध का महत्व अंग्रेजों के ध्यान में आ गया और १८४३ ई. में उन्होंने सिंध को हड़प लिया ।

ख सत्ता की पराजय : उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में पंजाब की सत्ता रणजीत सिंह के हाथ में थी । रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात उसका अल्पवयीन बेटा दलीप सिंह गद्दी पर बैठा । उसकी ओर से उसकी माँ रानी जिंदन राज्य का प्रशासन चलाने लगी परंतु सरदारों पर उसका अंकुश नहीं रह गया था। यह अवसर पाकर अंग्रेजों ने कुछ सरदारों

रणजीत सिंह

को बहला-फुसलाकर अपने पक्ष में कर लिया । अंग्रेज पंजाब पर आक्रमण करेंगे, ऐसी सोच सिखों की बन गई । परिणामस्वरूप उन्होंने अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया । सिख-अंग्रेजों में हुए इस प्रथम युद्ध में सिखों की पराजय हुई । अंग्रेजों ने दलीप सिंह को गद्दी पर यथावत बिठाए रखा । पंजाब में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ता जा रहा था और यह कुछ स्वतंत्रता प्रिय सिखों को मान्य नहीं था । मुलतान का अधिकारी मूलराज ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया । इस युद्ध में हजारों सिख सैनिक उतर आए । इस दूसरे युद्ध में भी सिख पराजित हुए । १८४९ ई. में अंग्रेजों ने पंजाब प्रदेश को अपने राज्य के साथ जोड़ दिया ।

मराठों की सत्ता भारत में एक महत्त्वपूर्ण और प्रबल सत्ता थी । मराठों को पराजित कर अंग्रेजों ने किस प्रकार भारत में अपनी सत्ता की नींव को सुदृढ़ बनाया; इसका अध्ययन हम अगले पाठ में करेंगे ।

स्वाध्याय

१. दिए गए विकल्प से उचित विकल्प चुनकर कथन पुनः लिखो ।

(१) १४५३ ई. में ऑटोमन तुर्कियों ने ..... शहर को जीत लिया ।
(अ) वेनिस (ब) कौन्स्टैन्टिनोपल
(क) रोम (ड) पैरिस

(२) औद्योगिक क्रांति का प्रारंभ ..... में हुआ ।
(अ) इंग्लैंड (ब) फ्रांस
(क) इटली (ड) पुर्तगाल

(३) अंग्रेजों के अवैध व्यापार की रोक-थाम करने का प्रयास ..... ने किया ।
(अ) सिराज-उद्-दौला (ब) मीर कासिम
(क) मीर जाफर (ड) शाह आलम

२. निम्न संकल्पनाएँ स्पष्ट करो ।

(१) उपनिवेशवाद (२) साम्राज्यवाद
(३) पुनर्जागरण युग (४) पूँजीवाद

३. निम्न को कारणसहित स्पष्ट करो ।

(१) प्लासी के युद्ध में सिराज-उद्-दौला की पराजय हुई ।
(२) यूरोपीय देशों को एशिया की ओर जाने वाले नये मार्गों को खोजना आवश्यक अनुभव होने लगा ।
(३) यूरोप के शासक व्यापारी कंपनियों को सैनिकी संरक्षण और व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान करने लगे ।

४. पाठ की सहायता से निम्न सारणी पूर्ण करो :

समुद्री नाविक	कार्य
.....	अफ्रीका के दक्षिण छोर तक पहुँचा ।
क्रिस्तोफर कोलंबस	....
.....	भारत के पश्चिमी तट पर कालिकत बंदरगाह पर पहुँचा ।

पुनर्जागरण युग के प्रसिद्ध चित्रकार, साहित्यकार, वैज्ञानिक के कार्यों के विषय में संदर्भ ग्रंथ तथा अंतरजाल की सहायता से जानकारी और चित्र प्राप्त करो तथा कक्षा में यह परियोजना प्रस्तुत करो ।

99T7JZ